56

परमेश्वर जब बत्तियां बुझा देता है

(18:1-24)

ब्रूस मैज़गर ने प्रकाशितवाक्य 17 और 18 को ''काल्पनिक शक्ति की साहित्यिक विजय'' के रूप में वर्णित किया है।[1] डेनियल रस्सल ने कहा है कि प्रकाशितवाक्य 18 ''प्रकाशितवाक्य के महान अध्यायों में से एक है। ... ऊंचे स्वर से पढ़ें तो यह अध्याय एक शानदार, सुंदर, भयदायक, प्रभावशाली कविता है।''[2]

अध्याय 18 का संदेश पुराने नियम की नीनवे (सपन्याह 2), एदोम (यशायाह 34) और इस्राएल (आमोस 5) के विनाश की घोषणाओं की तरह है। ये पद हमें विशेषकर बाबुल और सूर के पतन की घोषणा करते शोक गीत का स्मरण कराते हैं (यशायाह 13; 14; 21; यिर्मयाह 50; 51; यहेजकेल 26; 27)। पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल इस अध्याय के लिए सुर सजा देता है; परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि इसने पहले की शताब्दी के पाठकों को पुराने नियम की उन भविष्यवाणियों का स्मरण कराया था, जो बिल्कुल वैसे ही पूरी होनी थीं, जैसे परमेश्वर ने कहा था। इस प्रकार उन्हें फिर से आश्वस्त कराया गया था कि यदि परमेश्वर ने कहा कि बाबुल (अर्थात रोम) गिर जाएगा, तो उसने गिरना ही *था*।

अध्याय 18 के तीन भाग हैं (आयतें 1-8, आयतें 9-19, आयतें 20-24), जो बाबुल के पतन के विषय पर केन्द्रित हैं। उजाड़ नगर को दर्शाते दृश्य, जिनमें अब कोई मनुष्य नहीं रहता, मुझे सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। (आयतें 22, 23) क्योंकि यह केवल जंगली जीवों का बसेरा होना था (आयत 2)। बाबुल से कहा गया था ''और दीये का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा'' (आयत 23क)। किसी समय का घमण्डी नगर अन्धकारमय और सुनसान होना था।

तीनों भागों को इकट्ठा करने और पाप के परिणामों पर ज़ोर देने के लिए, मैं ''परमेश्वर जब बत्तियां बुझा देता है'' पर बात करना चाहता हूं। हम विस्तार में बात करेंगे, परन्तु विस्तार में बात करना सबसे महत्वपूर्ण पहलू नहीं है। जैसे माइकल विल्कोक ने ज़ोर दिया है कि *अर्थ* को समझने के बजाय *खतरे* को समझना आवश्यक है।[3]

बत्तियां बुझती *अवश्य* हैं (18:1-8)

परमेश्वर जब बत्तियां बुझाता है, तो बत्तियां *बुझ ही जाती* हैं।

घोषणा (आयतें 1-3)

यूहन्ना ने आरम्भ किया, ''इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसे बड़ा अधिकार प्राप्त था;[4] और पृथ्वी उसके तेज से प्रज्वलित हो गई'' (आयत 1)। यह स्वर्गदूत परमेश्वर के सामने से उसके अधिकार से परिपूर्ण और उसकी महिमा से चमकता हुआ आया।[5] ''उसने ऊंचे शब्द से पुकारा'' जिससे सब उसे यह कहते सुन सकते थे कि ''गिर गया, बड़ा बाबुल गिर गया है'' (आयत 2क)।[6] न्याय तो पहले ही सुनाया जा चुका था (14:8); अब दण्ड ही दिया जाना था।

स्वर्गदूत ने भूतकाल का इस्तेमाल किया, जैसे यह घटना पहले ही हो चुकी है, चाहे ''यूहन्ना द्वारा मन को अत्यधिक छू लेने वाले इन अध्यायों को लिखते समय ... रोम अभी भी जीवित था, अभी भी उसकी सम्प्रभुता और शान वैसे ही थी।''[7] न्याय पहले परमेश्वर के दिमाग में होता है। जहां तक परमेश्वर की बात थी, बाबुल का गिरना पूर्ण होने वाला एक कार्य था।[8]

बाबुल के गिरने का विवरण एक उदासी है: ''वह दुष्ट आत्माओं का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा[9], और हर एक अशुद्ध[10] पक्षी का अड्डा हो गया'' (आयत 2ख)।[11] यह दृश्य एक वीरान खण्डहर बने और घृणित प्राणियों का बसेरा बने नगर का है।

''दुष्ट आत्माओं'' और ''हर एक अशुद्ध आत्मा'' शब्दों के सम्बन्ध में याद रखें कि ''नये नियम का यह दावा है कि'' मूर्तिपूजकों के धर्मों की[12] ''उपासना और रीतियों में कुछ न कुछ अशुद्ध [था]।'' (देखें 1 कुरिन्थियों 10:20.) स्वर्गदूत के दिए संकेत में, ''अपने राज्य से निकाले गए मूर्तियों के देवता निराश होकर मन्दिरों के खण्डहरों में रहते थे, जहां कभी उनकी शक्ति को माना जाता था।''[13]

''अशुद्ध और घृणित'' पक्षी भी गिरे हुए बाबुल में बसेरा करते थे। हम में से कई लोग इसे रूपक के भाग के रूप में देख सकते हैं। हमने टूटे और खण्डहर बने ढांचों को देखा है, जिनमें पक्षी और अन्य जंगली जीव रहते हैं (उनमें से कई तो ऐसे हैं, जहां रात को जाने से हम डरते हैं)।

बाबुल के खण्डहरों की यह तस्वीर उस समय के आम लोगों को समझ में आती होगी। ''प्राचीन मध्य-पूर्व में रहने वाले लोग आंधियों और रेत के तूफ़ानों के साथ जंगल के बढ़ने का सामना करने के लिए लड़ते रहते थे। वीरान नगर शीघ्र ही जंगली जीवों का बसेरा बन जाता था।''[14] परमेश्वर के वचन को जानने वाले लोगों के लिए यह वाक्यांश अतिरिक्त महत्व वाला होगा कि प्राचीन बाबुल के गिरने की भविष्यवाणी में ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल हुआ था (देखें यशायाह 13:19-22) और वह भविष्यवाणी नाटकीय ढंग से पूरी हुई थी।

ऐतिहासिक बाबुल का गिरना पुरातन वस्तुओं के बड़े विनाश में से एक था।

> ... फारसियों की एक के बाद एक विजय से पहली शताब्दी तक मकिदूनियों, और पार्थियों का धीरे-धीरे पतन हो गया था, जिससे घटकर यह एक गांव जितना रह गया था। उपजाऊ भूमि में होने के बावजूद ... इसका महत्व बिल्कुल खत्म हो गया और यह खण्डहरों का ढेर बन गया।[15]

आयत 2 में आरम्भिक मसीहियों को यह बताया गया कि जैसे प्राचीन बाबुल गिरा था, वैसे ही प्रकाशितवाक्य वाला बाबुल अर्थात रोम भी गिर जाएगा।

आयत 3 हमें याद दिलाती है कि रोम का विनाश होना *क्यों* तय था। स्वर्गदूत ने परिचित शब्दों से अपनी बात आरम्भ की: ''क्योंकि उसके व्यभिचार की भयानक[16] मदिरा के कारण सब जातियां गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है'' (आयत 3क; देखें 14:8; 17:2)। यह रोम के अपवित्र प्रभाव, विशेषकर राजा की पूजा की बात है।

फिर स्वर्गदूत ने एक नया विचार जोड़ दिया: ''और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं[17]'' (आयत 3ख)। ''व्यापारियों'' का उल्लेख यहां पहली बार हुआ है (देखें आयतें 15, 23) जो परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई व्याख्या है कि लोग रोम द्वारा दुष्कर्म किए जाने के लिए क्यों कतार में लगे हुए थे। ''रोम ने संसार को शान्ति और सुरक्षा दी [थी]'' जिस कारण विलासिता का करोबार बढ़ गया और खुशहाली आई थी।[18] रोम के साथ व्यापारियों के अपवित्र समझौतों से धनवानों और समृद्ध लोगों के बैंक खाते भरे पड़े थे। जैसे पौलुस ने कहा, ''रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है'' (1 तीमुथियुस 6:10)।

अपील (आयतें 4, 5)

फिर यूहन्ना ने ''स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना'' (आयत 4क)। परमेश्वर के लिए बोली गई इस बात में[19] दो संदेश थे। पहला संदेश परमेश्वर के लोगों के लिए था कि ''हे मेरे लोगो, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े'' (आयतें 4-5)। प्रभु ने हमेशा चाहा है कि उसके लोग अलग हों। (देखें 2 कुरिन्थियों 6:17.)

अधिकार (आयतें 6-9)

दूसरा संदेश उनके लिए था, जिनसे परमेश्वर ने पलटा लेना था:[20] ''जैसा उसने तुम्हें दिया है, वैसा ही उसको भर दो, और उसके कामों के अनुसार उसे दोगुणा बदला दो, जिस कटोरे में उसने भर दिया था[21] उसी में उसके लिए दो गुणा भर दो'' (आयत 6)। ''उसे दोगुणा बदला दो'' और ''उसके लिए दोगुणा भर दो'' वाक्याशों का अर्थ हो सकता है कि रोम को उससे दोगुनी पीड़ा दी गई थी, जितनी उसने दी थी। बोने और काटने का नियम तो यही कहता है कि व्यक्ति उससे अधिक काटता है, जितना उसने बोया होता है और रोम को उसका बनता हक ही मिला था। परन्तु आई. टी. बैकविद ने ध्यान दिलाया कि ''उसे

उसका दोगुना पूरा-पूरा बदला चुकाने की औपचारिक अभिव्यक्ति'' थी।[22] (देखें यिर्मयाह 16:18; 17:18.) अगली आयत कहती है, ''जितनी उसने अपनी बढ़ाई की और सुख-विलास किया; उतनी उसको पीड़ा, और शोक दो'' (आयत 7क)।[23] आयत 6 में इस्तेमाल हुई शब्दावली से संकेत मिलता है कि अन्त में तराजू पर तौला जाना था और रोम को उसी हिसाब से वापस मिलना था, जैसे उसने दिया था (देखें मत्ती 7:2)।

क्या रोम ''पीड़ा और शोक'' की हकदार थी? क्योंकि ''उसने अपनी बड़ाई की और सुख विलास किया''-क्योंकि उसने अपने मन में कहा, ''मैं रानी हो बैठी हूं, विधवा नहीं; और शोक में कभी न पड़ूंगी'' (आयत 7)। उस घमण्ड से भरी को लगा कि उसे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। ''इसी कारण'' स्वर्गदूत ने कहा कि ''एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ पड़ेंगी,[24] अर्थात मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जाएगी'' (आयत 8क)।

''एक ही दिन में'' वाक्यांश का अर्थ समय के ''चौबीस घण्टे'' नहीं हैं। इस अध्याय में ''एक दिन'' और ''एक घण्टा'' (आयत 8 और 10 की तुलना करें) को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है। दोनों ही शब्दों का इस्तेमाल रोम की विपत्ति के *अचानक* होने को रेखांकित करने के लिए सांकेतिक रूप में किया गया है।[25]

प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय रोम की स्पष्ट भेद्यता को ध्यान में रखते हुए हम पूछ सकते हैं कि ''यह कैसे हो सकता है?'' स्वर्गदूत के शब्दों में एक उत्तर मिलता है। आयत 8ख कहती है, ''क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है।'' मूल लेख में, ''शक्तिमान'' शब्द इस पर बल देने के लिए पहले आता है: ''क्योंकि *शक्तिमान* है प्रभु परमेश्वर, जिसने उसे दण्ड दिया।'' रोम शक्तिशाली होगा (आयत 10) परन्तु परमेश्वर उससे भी शक्तिशाली था।

अन्धेरा छिप नहीं सकता (18:9-19)

परेमश्वर जब बत्तियां बुझा देता है, तो अन्धेरा छिप नहीं सकता।

वचन पाठ के पहले भाग में स्वर्गदूत ने कहा था कि रोम ''आग में भस्म कर दी जाएगी'' (आयत 8क; 17:16 भी देखें)। दूसरे भाग अर्थात 9 से 19 आयतों में तीनों समूहों को रोम के विनाश पर शोक करते धुएं और आग से पीछे खड़े दिखाकर संकेत को दोहराया गया है।[26] (बाबुल का गिरना का चित्र देखैं।)

राजा (आयतें 9, 10)

पहले हम साम्राज्य के राजाओं और हाकिमों को शोक करते देखते हैं:

> और पृथ्वी के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार, और सुख-विलास किया, जब उसके जलने का धुआं देखेंगे, तो उसके लिए रोएंगे, और छाती पीटेंगे। और उसकी पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होकर कहेंगे, हे बड़े नगर, बाबुल! हे दृढ़ नगर, हाय! हाय![27] घड़ी ही भर में तुझे दण्ड मिल गया[28] (आयतें 9, 10)।

ये वही राजा हैं, जिनका उल्लेख 17:2 में हुआ, और शायद वही दस राजा (17:12) जिन्होंने रोम के विनाश में भाग लिया था (17:16)। (कोई काम करके उसके परिणामों पर शोक करना, कोई नई बात नहीं है; देखें 2 कुरिन्थियों 7:10ख।) ''रोएंगे'' और ''छाती पीटेंगे'' शब्द मन ही मन दु:खी होने के लिए नहीं है, बल्कि उनसे संकेत मिलता है कि इन राजाओं ने विलाप करते हुए अपनी छातियां पीटी थीं।

परन्तु शोक करने वाले रोम के लिए उतना नहीं, जितना अपनी हानि के लिए रोए थे। सह-शासक रोए इसलिए थे क्योंकि उनकी सत्ता जाती रही थी। रूबल शैली ने लिखा है कि ''रोम के पतन पर विश्वव्यापी आतंक और भ्रम था।''[29]

एक विवरण तो विशेषकर राजाओं के बारे में बताता है: विलाप करते हुए वे ''दूरी पर'' खड़े थे। एक समय वे उस बड़ी वेश्या के साथ शारीरिक सम्बन्ध चाहते थे, परन्तु अब वे ''दूरी पर'' खड़े थे। वे उसे बचाने के लिए भागे नहीं अर्थात उन्होंने आग पर पानी नहीं डाला; उन्होंने अपने कपड़ों से आग की लपटों को बुझाया नहीं, बल्कि वे ''दूर'' खड़े रहे। ''केवल अपने लिए जीने वाले मरेंगे भी अपने लिए ही।''

बेचने वाले (आयतें 11-17क)

फिर व्यापारियों की तस्वीर दिखाई गई है ''जो उसके द्वारा धनवान हो गए थे'' (आयत 15)। वे ''उसके लिए रोएंगे और कलपेंगे क्योंकि अब कोई उनका माल मोल न लेगा'' (आयत 11)। उनके कारोबार का बड़ा साथी खो गया था, और उनकी आर्थिक तबाही होने वाली थी। मैं व्यापारियों के ओसटिया डॉक पर खड़े होने की कल्पना कर सकता हूं, जो अपने कारगो के[30] नीचे आग लगने से उठते धुएं को देख सकते थे।

12 और 13 आयतों में उन कारगो के व्यापारी सामान वाली की बात मिलती है:

> ... सोना, चान्दी, रत्न, मोती, और मलमल, और बैंजनी, और रेशमी, और किरमिजी कपड़े, और हर प्रकार का सुगन्धित काठ, और हाथीदांत की हर प्रकार की वस्तुएं, और बहुमोल काठ, और पीतल, और लोहे, और संगमरमर के सब भांति की वस्तुएं और दालचीनी, मसाले, धूप, इत्र, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूं, गाय, बैल, भेड़-बकरियां, घोड़े, रथ और दास, और मनुष्यों के प्राण।

सूची में दी गई वस्तुएं सात किस्मों की हैं: (1) कीमती धातुएं और पत्थर, (2) सुंदर कपड़े, (3) महंगी लकड़ी, (4) मसाले, (5) भोजन सामग्री, (6) महंगी सम्पत्ति और (7) मानवीय बंधक। फ्रैंक पैक ने इसे ''सम्पूर्ण साहित्य में पाई जाने वाली सबसे व्यावसायिक सभ्यता की सबसे प्राचीन तस्वीरों में से एक'' कहा है।[31]

राजाओं की तरह, व्यापारी भी ''दूरी पर'' खड़े थे। राजाओं की तरह वे ''उसकी पीड़ा के भय के कारण'' खड़े थे। उन्हें भय था कि यदि वे उसके अधिक निकट जाएंगे तो उन्हें भी उसका दण्ड मिल सकता है। दूर से खड़े होकर वे पुकार रहे थे, ''हाय! हाय! यह बड़ा नगर, जो मलमल, और बैंजनी, और किरमिजी कपड़े पहिने था, और सोने, और

रत्नों, और मोतियों से सजा था, घड़ी ही भर में उसका ऐसा भारी धन नाश हो गया!'' (आयतें 16, 17क)। राजाओं को *सत्ता* छिन जाने की चिन्ता थी जबकि व्यापारियों को *लाभों* के छिनने की चिन्ता सता रही थी।

मल्लाह (आयतें 17ख-19)

शोक करने वालों का तीसरा समूह *पदवी* के छिन जाने से भयभीत था; रोम के गिरने से उनकी नौकरियां डांवांडोल हो गई थीं: ''और हर एक माझी[32], और जलयात्री[33], और मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए'' (आयत 17ख) थे। इनमें ''समुद्र से जीविका कमाने वाले लोगों'' में नाव बनाने वाले, मछेरे, मोती निकालने वाले और अन्य शामिल थे।

> [इसके लोग] उसके जलने का धुआं देखते हुए पुकारकर कहेंगे, कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है,[34] और अपने-अपने सिरों पर धूल डालेंगे,[35] और रोते हुए और कलपते हुए चिल्ला-चिल्लाकर कहेंगे, कि हाय! हाय! यह बड़ा नगर जिसकी सम्पत्ति के द्वारा समुद्र के सब जहाज़ वाले धनी हो गए थे, घड़ी ही भर में उजड़ गया (आयतें 18, 19)।

तीनों समूह उन लोगों का, मख्युतया उनका, जो मसीही नहीं थे, प्रतिनिधित्व करते थे अर्थात जिन्होंने रोम के साथ मिलकर लाभ कमाया था (13:15, 16)। रोम के गिरने पर सारे संसार को पता चल जाना था।

बत्तियां हमेशा के लिए बुझाई जाएंगी (18:20-24)

अन्ततः परमेश्वर जब बत्तियां बुझा देगा तो रोशनी हमेशा के लिए जाती रहेगी।

आनन्द करते (आयत 20)

मल्लाहों के विलाप करते हुए, एक अनजानी सी आवाज़[36] ने कहा: ''हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगो, और प्रेरितो, और भविष्यवक्ताओ, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उससे तुम्हारा पलटा लिया है'' (आयत 20)। ''पवित्र लोगो,'' ''प्रेरितो'' और ''भविष्यवक्ताओ'' शब्द अपने विश्वास के लिए मरने वाले मसीही लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया था। (बाइबल की परम्परा के अनुसार प्रकाशितवाक्य लिखे जाने तक यूहन्ना को छोड़ सब प्रेरित मारे जा चुके थे।) यह ''कब तक?'' की शहीदों की पुकार का अन्तिम उत्तर था (6:9-11)।

''उससे तुम्हारा पलटा लिया है'' वाक्यांश मूल में कठिन है, परन्तु इसमें विचार यह लगता है कि ऊपरी अदालत (परमेश्वर) ने निचली अदालत (रोम) का निर्णय उलट दिया था। मसीही लोगों पर रोम द्वारा दिया गया फैसला अब उसी पर उलटा पड़ा था।[37]

बर्बादी (आयतें 21-23क, ख)

फिर रोम के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय सांकेतिक कार्य में नाटकीय रूप में हुआ: ''फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत[38] ने बड़ी चक्की के पाट के समान एक पत्थर उठाया'' (आयत 21क)। ''बड़ी चक्की का पाट'' चक्की का बहुत बड़ा पाट होगा, जिसे जानवरों द्वारा घुमाया जाता था। कई टन भारी पत्थर उठाने के लिए बहुत शक्ति की आवश्यकता होगी! स्वर्गदूत ने उस बड़े पत्थर को उठाया ''और यह कहकर समुद्र में फैंक दिया[39] कि बड़ा नगर बाबुल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा और फिर कभी उसका पता न मिलेगा'' (आयत 21ख)।

दृश्य बहुत भयानक है। (पत्थर उठाते हुए स्वर्गदूत का चित्र देखें)। उसकी बड़ी-बड़ी मांसपेशियां दिखाई दे रही हैं। उस पत्थर को हवा में से टकराते हुए, बड़े ज़ोर से समुद्र में गिरते हुए देखें।

> [पत्थर के] खामोशी से अपरिवर्तनीय रूप में गिरने, सदा काल की गुमनामी, सनातन सर्दी में गिरने [की कल्पना करें]। हो सकता है कि मछलियां, अन्य जल जन्तु, इससे खेलें; इस पर घना अन्धेरा छाया रहे; पर कोई मानवीय आंख इसे फिर कभी न देख पाएगी।[40]

ऊपर से पत्थर के कारण पैदा हुई हलचल खत्म हो जाती है, समुद्र शांत होने लगता है और ऐसा लगता है जैसे पत्थर वहां हो ही न। इस प्रकार रोम के गिरने की उलट तस्वीर बन गई। भावुकतावादी लोगों को ''फिर से रोमी साम्राज्य आने'' की बात कहना अच्छा लगता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य ऐसी किसी अवधारणा का संकेत नहीं देता। विश्व शक्ति के रूप में रोम का गिरना पूरा होना था।

हम कहीं चूक न जाएं इसलिए आयत 21 में ''फिर कभी ... न'' वाक्यांश का इस्तेमाल हुआ है, जो आयत 22 और 23 में पांच से अधिक बार[41] मिलने वाला वाक्यांश है। यूनानी धर्मशास्त्र स्थानीय भाषा से भी मज़बूत है, जिसमें दोहरे नकारात्मक (*ou me*) पर *eti* (जिसका अनुवाद ''फिर कभी नहीं'' हुआ है) से दोहरा बल मिलता है। यह ''कभी नहीं, कभी नहीं, *कभी नहीं* !'' कहने का यूनानियों का ढंग था। आज विनाश आने पर, हम अपने आप को यह कहते हुए तसल्ली देते हैं, ''सब ठीक हो जाएगा।'' परन्तु रोम के विषय में वचन कहता है कि उसकी स्थिति *कभी* ठीक *नहीं* होगी। एक बार गिर जाने पर उसने *सदा के लिए* गिर जाना था।

रोम में अब मधुर संगीत सुनाई नहीं देना था: ''और वीणा बजाने वालों, और गायकों,[42] और बंसी बजाने वालों, और तुरही फूंकने वालों का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा'' (आयत 22क)। अब मानवीय उद्योग का गुनगुनाना नहीं रहना था: ''और किसी उद्यम का कोई कारीगर भी फिर कभी तुझ में न मिलेगा; और चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा'' (आयत 22ख)। रोम की गलियां और घर सदा के लिए अन्धकार बन जाने थे: ''और दीये का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा''

(आयत 23क)।[43] आनन्द का शोर अब सदा के लिए शान्त हो जाना था: ''और दूल्हे और दुल्हन का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा'' (आयत 23ख)। सन्नाटा और अन्धकार यानी सनातन खामोशी और सनातन अन्धकार ने राज करना था।[44]

कारण (आयतें 23ग, 24)

स्वर्गदूत ने रोम को यह बताते हुए कि उसका विनाश क्यों तय था, निष्कर्ष निकाला। पहले, उसने कहा कि ''क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के प्रधान हैं'' (आयत 23ग)। केवल बड़ा होना पाप नहीं है, इसी कारण इस वाक्य को पूरे अध्याय की रोशनी में पढ़ना आवश्यक है: रोम के व्यापारी दूसरों का ध्यान न करके, धन कमाने के लिए कुछ भी करने को तैयार होने के कारण ''प्रधान'' बन गए थे। दूसरा, रोम ने इसलिए गिरना था क्योंकि ''[उसके] टोने से सब जातियां भरमाई गई थीं'' (आयत 23घ); रोम ने राजा की पूजा करने में अपने पीछे लगाकर जातियों को भरमाया था। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कारण अन्त के लिए छोड़ दिया गया था: ''और भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों, और पृथ्वी पर सब घात किए हुओं का लोहू उसी में पाया गया'' (आयत 24)। निर्दोष और परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों का लहू रोम की गलियों से बहता था। अब उसे परिणाम भुगतने थे।

सारांश

अन्त में मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि अध्याय 18 में परमेश्वर का उद्देश्य विस्तार से बताना नहीं था कि रोम ने *कैसे* गिरना था या गिरने के बाद उसका चेहरा कैसा होना था। अध्याय के आरम्भ और अन्त में नगर को उजड़ा और जंगली जानवरों से भरे दिखाया गया है, परन्तु और कहीं उसे जलते हुए दिखाया गया है (18:9, 18)। अगले अध्याय में यह कहा जाएगा कि ''उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा'' (19:3)। जलता रहने वाला कोई ढेर किसी भी प्रकार के जीवित प्राणियों के लिए रहने योग्य नहीं होगा। हमें इन विवरणों को अक्षरश: नहीं, बल्कि सांकेतिक अर्थ में लेना चाहिए।

मैंने बताया है कि प्राचीन बाबुल की भविष्यवाणियां अन्त में किस प्रकार अक्षरश: पूरी हुईं, परन्तु वे भविष्यवाणियां भी विवरणों के बजाय उसके गिरने के *तथ्य* से अधिक जुड़ी हई थीं। बाबुल का गिरना तब हुआ जब मादा-फारसियों ने कब्ज़ा कर लिया, परन्तु कई सालों तक वह एक सुन्दर नगर के रूप में बनी रही। दौ सौ साल बाद सिकंदर महान, जिसने बाबुल को ''घर से दूर अपना घर'' बना लिया; मरने के समय वहीं था। यशायाह तथा अन्यों द्वारा इस्तेमाल किए गए संकेत नाटकीय रूप से यह कहने के लिए कि बाबुल के विनाश का वर्णन उतना विस्तार से नहीं था, जितना नाटकीय रूप से यह कि विश्वव्यापी शक्ति के रूप में बाबुल के दिन गिने-चुने थे।

वैसे ही अध्याय 18 के निराशामय दृश्यों को गिरे हुए बाबुल के तुरन्त बने चित्र के रूप में न देखें। आज भी रोम नगर का अस्तित्व है; यह इटली की हचलच भरी राजधानी है। परन्तु महानगर के केन्द्र में, रोमी फोरम के सुनसान खण्डहर हैं, जिन्हें प्राचीन इतिहास में

दिलचस्पी लेने वाले लोग भी देखने आते हैं–उस बात का नाटकीय स्मरण दिलाने वाले कि जब परमेश्वर कहता है कि विनाश निकट है तो आप उस पर विश्वास कर सकते हैं!

कोई हैरान हो सकता है कि रोम नगर में ऐसा क्या हुआ होगा।

> परमेश्वर के बहुत से और निर्णयों की तरह, यह पूरा होना वास्तव में धीरे-धीरे, परन्तु अन्त में अचानक ही आ गया। कई सदियों तक रोम में गिरावट आती रही और इसका पतन होता रहा, नैतिक विष इसके पूरे जीवन में घुल गया। फिर 410 ईस्वी के अगस्त के एक अभागे सप्ताह में अलारिक ने गोथों के अपने उत्तरी दलों के साथ रोम को लूटकर इसे कूड़े का ढेर बना दिया।[45]

> 455 में वंडालों ने दो सप्ताह तक नगर को घेरे रखा। 476 में जर्मनी के मुख्य ओडोएसा (इटली का पहला राजा) ने अन्तिम राजा को गद्दी से उतार कर साम्राज्य के ताबूत को बन्द करके उसमें कील ठोंक दी।[46]

परमेश्वर ने कहा था कि रोम नष्ट हो जाएगा और यह हो गया।

प्रकाशितवाक्य 18 की चेतावनी केवल रोम ही के लिए नहीं, बल्कि प्रभु का विरोध करने वाले *सब* लोगों के लिए थी यानी यह अध्याय *हर जाति* के लिए चेतावनी है।[47] हर गम्भीर नागरिक के लिए यह पूछना आवश्यक है कि ''हमारे 'पापों का ढेर' स्वर्ग तक पहुंचने में कितना समय है?'' बाइबल कहती है, ''जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है'' (नीतिवचन 14:34)। यह अध्याय नगरों, पड़ोसियों, समाजों, मानवतावादी दर्शन के केन्द्रों अर्थात *हर किसी को* जिसे लगता है कि वह परमेश्वर के बिना रह सकता/सकती है, के लिए भी चेतावनी है।

यदि हम अध्याय 18 से अधिक से अधिक लाभ लेना चाहते हैं तो इसे *अपने ऊपर* लागू करें कि परमेश्वर के तराजू में तौले जाने पर, क्या हमारा भार कम हो सकता है?

क्या जब तक हम परमेश्वर के पास नहीं जाते तब तक आत्मिक विनाश हमारी प्रतीक्षा करता है? हां! अध्याय 18 कोई संदेह नहीं रहने देता कि परमेश्वर पाप के प्रति गम्भीर है और हमें भी होना चाहिए! यदि आपमें कोई आत्मिक कमी है तो प्रतीक्षा न करें। इसे अभी पूरा करें![48]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

जिम मैक्गुइगन ने अध्याय 18 को ''बाबुल की निधन सूचना'' कहा।[49] यह अच्छा शीर्षक और विषय हो सकता है। एक समाचार पत्र के कार्यालय में ''मुर्दाघर'' नामक विभाग है, जिसमें (अन्य फाइलों में) प्रसिद्ध लोगों की समय से पूर्व निधन सूचनाएं लिखी हैं, जो अभी जीवित हैं। प्रकाशितवाक्त 18 रोम की निधन सूचना है, जो होने से पहले परमेश्वर के हाथ से लिखी गई।

वारेन वियर्सबे ने इस अध्याय की रूपरेखा के लिए ''आवाज़'' शब्द का इस्तेमाल

किया: (1) दण्ड की आवाज़ (आयतें 1-3); जुदाई की आवाज़ (आयतें 4-8); विलाप की आवाज़ (आयतें 9-19); जश्न की आवाज़ (आयतें 20-24)। ओवन क्राउच ने इस अध्याय को ''दण्ड की घोषणाएं'' नाम दिया; पहले उसने स्वर्ग से घोषणाओं की (आयतें 1-8, 20-24) और फिर पृथ्वी से घोषणाओं की चर्चा की (आयतें 9-19)।

इस अध्याय के और सम्भावित शीर्षक इस प्रकार हैं: ''वैभव जो रोम का था''; ''घमण्ड का गिरना''; ''शक्ति का दण्ड''; ''विनाश के लिए ठहराया गया''; ''जितने वे बड़े हैं''; ''विलापगीतों की शैतान की पुस्तक।''

टिप्पणियां

[1]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 85. [2]डेनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1935), 206. [3]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 166. [4]प्रकाशितवाक्य में यह उन कुछ स्थानों में से एक है जहां स्वर्गदूत को अधिकार मिलने की बात कही गई है। स्वर्गदूत की घोषणा का बहुत महत्व था; यूहन्ना और उसके पाठकों को पता होना चाहिए था कि यह बात *अधिकार से* कही गई थी। [5]देखें निर्गमन 34:29-35; भजन संहिता 104:2; यहेजकेल 43:1-5; 1 तीमुथियुस 6:16. [6]देखें यशायाह 21:9. [7]मैज़गर, 87. [8]आयत 8 में आगे रोम के विनाश की बात करने के लिए भविष्यकाल का इस्तेमाल किया जाएगा। पूरे अध्याय में काल भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच में इधन-उधर रहता है: यह इतनी पक्की बात थी कि इसे ऐसे कहा जा सकता था जैसे कालांतर में हुई हो; विनाश के कारकों के पहले से होने के कारण इसे वर्तमान में होने वाली घटना कहा जा सकता था; परन्तु वास्तविक घटना अभी भविष्य में होनी थी। [9]यहां इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द का मुख्य अर्थ ''कैद, पकड़ या पिंजरा'' है (देखें KJV)। वचन की समानांतरता से संकेत मिलेगा कि इस आयत में शब्द का इस्तेमाल मुख्यतया ''वास स्थान'' के लिए समानार्थक शब्द के रूप में हुआ है। [10]जैसा कि प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर होता है, यहां पुराने नियम का रूपक इस्तेमाल किया गया है। पुराने नियम में ''अशुद्ध'' पक्षियों के विषय में नियम थे (लैव्यव्यवस्था 11)। मुख्यतया अशुद्ध पक्षी शिकार किए जाने वाले पक्षी थे, जिन्हें आमतौर पर खाया जाता था।

[11]आयत 2 की तुलना यशायाह 13:20-22; 34:10-15; यिर्मयाह 51:37 से करें। [12]जे. डब्ल्यू राबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 146. [13]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2 संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 151. [14]राबर्ट्स, 146. [15]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 90. [16]अनुवादित यूनानी शब्द ''व्यभिचार'' का अनुवाद यहां ''क्रोध'' भी हो सकता है (देखें KJV)। [17]मूल धर्मशास्त्र में यह वाक्यांश इस प्रकार है ''उसकी विलासिता की *शक्ति*।'' [18]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 223. [19]परमेश्वर की ओर से बोलने वाली आवाज़ (''हे मेरे लोगो'' वाक्यांश पर ध्यान दें), परन्तु स्पष्टतया यह परमेश्वर नहीं था क्योंकि आयत 5 में परमेश्वर को अन्य पुरुष कहा गया है। कइयों ने अनुमान लगाया है कि बोलने वाला मसीह था। [20]वचन यह नहीं बताता कि बदला लेने वाले कौन हैं। हो सकता है कि ये बातें उसके लिए हों, जिसे अध्याय 17 में कहा

गया कि बाबुल के (रोम के) खात्मे के लिए जिम्मेदार होगा (17:16) या ये शब्द केवल बदला लेने वाले स्वर्गदूतों के लिए ही हों।

[21]रोम के दण्ड की उपयुक्तता इस बात में देखी जाती है कि जो कटोरा जातियों को मदहोश करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, वही परमेश्वर के क्रोध से भरा कटोरा होना था। [22]आई. टी. बेकविद, द *अपोकलिप्स ऑफ जॉन,* 715. राबर्ट माउंस, द *बुक ऑफ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 325 में उद्धृत। ''दो गुणा'' का इस्तेमाल कई बार किसी व्यक्ति के किसी और से ''दोगुना'' होने पर कहा जाने की तरह वैसा ही होने के अर्थ में किया गया है। अन्य शब्दों में दोनों एक ही बात है। [23]आयत 7क की तुलना यिर्मयाह 50:29 के दूसरे भाग से करें। [24]यहां यूनानी शब्द ''मृत्यु'' के लिए शब्द है और कई अनुवादों में यह ''मृत्यु'' ही है (देखें KJV)। इसका अर्थ ''महामारी'' हो सकता है। [25]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''गरजती टापें'' और ''कोई आश्चर्य नहीं'' पाठ देखें। इस वाक्य रचना की तुलना यशायाह 47:9 की वाक्य रचना से करें। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे'' पाठ में ''एक'' अंक के संकेत पर नोट्स देखें। [26]9 से 19 आयतों की तुलना सोर पर यहेजकेल के विलाप से करें (यहेजकेल 27)। [27]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार'' पाठ में ''हाय'' शब्द देखें। कई अनुवादों में यहां ''अफसोस'' है (देखें KJV) परन्तु यह शब्द वही है जिसका अनुवाद अन्य स्थानों पर ''हम'' किया गया है। यहां और 16 व 19 आयतों में ज़ोर देने के लिए इसे दो बार दोहराया गया है। [28]''तुझे दण्ड मिल गया'' वाक्यांश का संकेत ''जिस दण्ड के तू योग्य था'' और इसका अर्थ ''जो दण्ड तूने अपने ऊपर लाया'' है। [29]रूबल शैली, द *लैंब एंड हिज़ एनिमीज़: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टवंट्यिथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 99. [30]कई अनुवादों में ''merchandise'' है (देखें KJV), परन्तु ''कारगो'' अक्षरश: अनुवाद है।

[31]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 37. [32]यूनानी शब्द का अनुवाद ''माझी'' जहाज़ के स्वामी के बजाय मल्लाह या चालक का संकेत देता है। [33]मूल धर्मशास्त्र में ''हर कोई कहीं न कहीं जल यात्रा में'' है। सवारियों के अलावा कारगो और शायद अन्य लोग भी होंगे। [34]इस प्रश्न की तुलना यहेजकेल 27:32ख से करें। [35]कपड़े फाड़ने की तरह (प्रेरितों 14:14) सिर पर धूल डालना शोक प्रकट करने का प्राचीन संकेत था (देखें यहेजकेल 27:30)। हम में से कई लोग इन प्रतीकों का इस्तेमाल नहीं करते, परन्तु आज भी हर समाज में शोक व्यक्त करने के अपने-अपने संकेत हैं (जैसे कई जगह काले कपड़े पहने जाते हैं)। [36]कई अनुवादों की संरचना से लगेगा कि वे शब्द मल्लाहों द्वारा कहे गए थे, परन्तु वे शब्द उनके व्यवहार से मेल नहीं खाते। [37]इस प्रकार के आदेश के लिए देखें व्यवस्थाविवरण 19:16-21. [38]पुस्तक में यह तीसरे ''बलवन्त स्वर्गदूत'' का उल्लेख है (देखें 5:2; 10:1)। [39]इस क्रिया की तुलना यिर्मयाह 51:59-64 से सम्बन्धित घटना में करें; मरकुस 9:42 भी देखें। [40]रस्सल, 211.

[41]यदि इस बात का कोई सांकेतिक अर्थ है कि वाक्यांश छह बार मिलता है, तो सम्भवतया यह *असफलता* का विचार ही है। (''छह'' के सांकेतिक महत्व के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''यहां अजगर होंगे'' में देखें।) [42]यूनानी शब्द के अनुवाद ''गायक'' का अर्थ है ''संगीत में निपुण।'' यह गायकों के लिए हो सकता है, और सम्भवतया इस संदर्भ में गायकों के लिए ही है। RSV में ''minstrels'' अर्थात संगीतकार है। [43]हमें नहीं मालूम कि रोम में स्ट्रीट लाइट्स थीं या नहीं, परन्तु धनवानों के घरों में खूब रोशनी होती थी। मर्यादित घरों में भी दीये होते थे और गलियों में मशालें लेकर जुलूस के रूप में चलना आम बात थी। [44]22 और 23 आयतों की तुलना यशायाह 24:8; यिर्मयाह 25:10; यहेजकेल 26:13 से करें। इस नाटकीय भाग को बहुत बढ़ाया जा सकता है। कल्पना करें कि यदि 22 और 23 आयतों की व्याख्या उस जगह के लिए हो जहां आप रहते हैं तो कैसा होगा। [45]मैज़गर, 87. [46]शैली, 99. [47]कई टीकाकार अमेरिका के लिए विशेष प्रासंगिकता बनाते हैं। उदाहरण के लिए देखें होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन*

एंड कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 366, 371-72. जिस देश में आप रहते हैं उस पर इसे लागू करें। [48]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि अपनी आत्मिक आवश्यकताओं का ध्यान कैसे रखना है। इसमें सहायता के लिए वचनों की सूची के लिए अन्तिम पाठ की टिप्पणी 50 देखें। अगला पाठ ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ'' देखें। [49]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 249.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अध्याय 18 में दिखाए गए दण्ड के पुराने नियम के हवालों को पढ़ें और उन पर विचार करें। आपको क्यों लगता है कि इन वचनों में जिनका हमने अध्ययन किया है वैसे ही शब्दों का इस्तेमाल हुआ था?
2. आयत 2 में स्वर्गदूत ने भूतकाल का इस्तेमाल क्यों किया? क्या इसका अर्थ यह था कि रोम मूल रूप से पहले ही नष्ट हो चुका था?
3. आपने कभी कोई खण्डहर बनी इमारत देखी है जिसमें ''अशुद्ध'' जीव रहते हों (आयत 2 वाले दृश्य की तरह)?
4. आयत 3 से संकेत मिलता है कि धनवान होने की इच्छा रोम के विनाश में एक कारक थी। क्या लाभ कमाने में कोई बुराई है? धन कमाने का प्रयास पाप कब होता है?
5. ''उसे दोगुना बदला दो'' वाक्यांश पर (आयत 6) और इसके सम्भावित अर्थों पर चर्चा करें। आपको क्या लगता है कि इसका क्या अर्थ है?
6. क्या ''एक दिन'' और ''एक घड़ी'' वाक्यांशों को अक्षरश: या सांकेतिक रूप से लिया जाना चाहिए? उनका सांकेतिक महत्व क्या है?
7. रोम पर विलाप करने वाले तीन समूह कौन से दिखाए गए हैं? वे *क्यों* रो रहे थे? वे ''दूर खड़े'' क्यों थे?
8. स्वर्गदूत के समुद्र में चक्की का पाट गिराने का क्या सांकेतिक महत्व था?
9. अध्याय के अन्तिम भाग में ''कभी ... न'' (या इसके जैसा) शब्द कितनी बार आया है?
10. 22 और 23 आयतों के विवरण को उस कस्बे या नगर के लिए लागू करें, जहां आप रहते हैं (या अपने निकटतम नगर या कस्बे पर)। ऐसे नगर में से चलते हुए आपके ध्यान में क्या आता है?
11. विचार करें कि रोम का सांसारिक रूप में क्या हुआ?
12. आपको क्या लगता है कि अध्याय 18 से हमें क्या सबक लेना चाहिए?

बाबुल का गिरना (18:9-19)

पत्थर उठाते हुए स्वर्गदूत (18:21)